विनती

अहो जगत गुरु देव सुनिये अर्ज हमारी,
तुम प्रभु दीनदयाल मैं दुखिया संसारी ॥१॥
इस भव वन में बादि काल अनादि गमायो,
भ्रमत चतुर्गति माहिं सुख नहिं दुःख बहु पायो ॥२॥
कर्म महारिपु जोर ये एक न कान करे जी,
मन माने दुःख देंय काहू सो नाहिं डरेजी ॥३॥
कबहूँ इतर निगोद कबहूँ नर्क दिखावें,
सुर नर पशु गति माहिं बहु विधि नाच नचावें ॥४॥
प्रभु इनको प्रसंग भव भव माहिं बुरो जी,
जो दुःख देखे देव तुम से नाहिं दुरो जी ॥५॥
एक जन्म की बात कहि न सकों सुनि स्वामी,
तुम अनन्त पर्याय जानत अन्तर्यामी ॥६॥
मैं तो एक अनाथ ये मिल दुष्ट घनेरे,
कियो बहुत बेहाल सुनिये साहब मेरे ॥७॥
ज्ञान महानिधि लूट रंक निबल करि डारो,
इनही तुम मुझ मांहि हे प्रभु अंतर पारो ॥८॥
पाप पुण्य मथि दोय पायन बेड़ी डारी,
तन कारागृह मांहि मोहि दियो दुख भारी ॥९॥
इनको नेक बिगार मैं कुछ नाहिं करो जी,
बिन कारण जगबन्धु बहु विधि बैर लियो जी ॥१०॥
अब आयो तुम पास सुन जिन सुयश तिहारो,
नीति निपुण महाराज कीजे न्याय हमारो ॥११॥
दुष्टन देहु निकार साधुन को रख लीजै,
बिनवै 'भुधरदास' हे प्रभु ढ़ील न कीजे ॥१२॥